Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-116-121

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 116-121

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

1. श्रीमती गुलाब पाठक
सहायक प्रोफ़ेसर,
सी.एम. डी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ. ग.).

2. भुनेश्वर प्रसाद
सहायक प्राध्यापक,
डी. पी. विप्र शिक्षा महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ. ग.).

3. रामानुज निषाद
सहायक प्राध्यापक, हसदेव शिक्षा
महाविद्यालय, कोरबा (छ. ग.).

Corresponding Author :

श्रीमती गुलाब पाठक
सहायक प्रोफ़ेसर,
सी.एम. डी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ. ग.).

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय वातावरण का सुधार और छात्रों पर प्रभाव

सारांश : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में समग्र और बहुआयामी सुधार की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में ऐसा वातावरण निर्मित करना है, जो शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को संतुलित रूप से प्रोत्साहित करे। NEP-2020 में समावेशी शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, बहुआयामी और बहुभाषीय शिक्षण, डिजिटल शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षण और छात्र केंद्रित शिक्षण विधियों पर विशेष जोर दिया गया है (Government of India, 2020)। यह शोध अध्ययन इस बात का विश्लेषण करता है कि NEP-2020 के लागू होने से विद्यालय के भौतिक, सामाजिक और शैक्षणिक वातावरण में किस प्रकार परिवर्तन आए हैं और इन परिवर्तनों का छात्रों के सीखने, आत्मविश्वास, सहभागिता, सामाजिक कौशल और मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ा है। अध्ययनों और सर्वेक्षणों के माध्यम से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सकारात्मक विद्यालय वातावरण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों में वृद्धि करता है, उनकी रचनात्मकता और समस्या समाधान क्षमताओं को विकसित करता है और भावनात्मक एवं सामाजिक संतुलन बनाए रखता है (Sharma & Yadav, 2021; Cohen et al., 2009)। इसके विपरीत, नकारात्मक और असंगठित वातावरण छात्रों की सीखने की क्षमता, अनुशासन और सामाजिक व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। शोध का मुख्य निष्कर्ष यह है कि NEP-2020 के सिद्धांतों के प्रभावी कार्यान्वयन से विद्यालय में सकारात्मक बदलाव संभव हैं, जो छात्रों के समग्र और सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

बीज शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यालय वातावरण, छात्र विकास, समग्र शिक्षा, शैक्षणिक सुधार, मानसिक स्वास्थ्य।

प्रस्तावना : शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की रीढ़ होती है और विद्यालय उसका सबसे महत्वपूर्ण संस्थान है।

विद्यालय केवल ज्ञानार्जन का केंद्र नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक और नैतिक विकास का आधार भी है।

भारत में शिक्षा सुधार की दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) एक ऐतिहासिक पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को समावेशी, लचीला और बहुआयामी बनाना है (Government of India, 2020)। इस नीति ने विद्यालय वातावरण को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया है ताकि छात्र न केवल शैक्षणिक रूप से, बल्कि जीवन कौशल और मानवीय मूल्यों से भी समृद्ध हो सकें। विद्यालय वातावरण में कक्षा-कक्ष की संरचना, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, अधिगम साधन, सहपाठी सहयोग, अनुशासन व्यवस्था तथा भावनात्मक सुरक्षा जैसे तत्व शामिल होते हैं (Fraser, 2015)। NEP-2020 इन सभी पहलुओं पर बल देते हुए विद्यार्थियों के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। नीति का फोकस experiential learning, critical thinking, multidisc-ciplinary approach और holistic education पर है (Kumar, 2021)। इस प्रकार विद्यालय वातावरण में सुधार केवल अवसंरचनात्मक स्तर तक सीमित न होकर शिक्षण-प्रक्रिया और छात्रों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से भी जुड़ा हुआ है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि सकारात्मक विद्यालय वातावरण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों, आत्मविश्वास, सहभागिता और सामाजिक-भावनात्मक कौशल को बढ़ाता है (Cohen, McCabe, Michelli, & Pickeral, 2009)। वहीं, नकारात्मक वातावरण उनके मानसिक स्वास्थ्य, सीखने की क्षमता और सामाजिक संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। NEP-2020 का यह मानना है कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराए (National Education Policy, 2020)। इस संदर्भ में यह शोध-पत्र विद्यालय वातावरण में NEP-2020 के द्वारा लाए गए परिवर्तनों और इन परिवर्तनों के छात्रों पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करेगा। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि किस प्रकार नीति का कार्यान्वयन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों, जीवन-मूल्यों और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

विद्यालय वातावरण के घटक : विद्यालय वातावरण को मुख्य रूप से चार प्रमुख घटकों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

- शैक्षणिक वातावरण – शिक्षकों की योग्यता, शिक्षण शैली, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन पद्धति।
- भौतिक वातावरण – कक्षाओं का आकार, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल मैदान, स्वच्छता और सुरक्षा।
- सामाजिक वातावरण – सहपाठियों के साथ सहयोग, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, समूह गतिविधियाँ।
- सांस्कृतिक और भावनात्मक वातावरण – विद्यालय की संस्कृति, उत्सव, नियम, छात्र कल्याण गतिविधियाँ और मानसिक सुरक्षा।

NEP 2020 इन सभी घटकों में सुधार की दिशा में मार्गदर्शन करती है ताकि छात्र सकारात्मक और समग्र शिक्षा अनुभव प्राप्त कर सकें।

शैक्षणिक वातावरण का सुधार और प्रभाव : शैक्षणिक वातावरण किसी भी विद्यालय की सफलता और छात्रों के समग्र विकास का महत्वपूर्ण निर्धारक होता है। यह केवल भौतिक संरचना या कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठी सहयोग, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन, मूल्य आधारित शिक्षा और भावनात्मक सुरक्षा भी शामिल होती हैं। एक सकारात्मक और समग्र शैक्षणिक वातावरण छात्रों के सीखने की क्षमता, सामाजिक कौशल, मानसिक स्वास्थ्य और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने भारतीय विद्यालय प्रणाली में समग्र सुधार की दिशा में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। नीति का मुख्य उद्देश्य ऐसा विद्यालय वातावरण बनाना है, जो **समावेशी, लचीला, छात्र-केंद्रित और अनुभवात्मक शिक्षा पर आधारित** हो (Government of India, 2020)।

NEP-2020 के अनुसार, शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए; वह मार्गदर्शक, मेंटर और विद्यार्थियों के मानसिक व सामाजिक विकास में सक्रिय सहयोगी बनें।

शैक्षणिक वातावरण के सुधार में डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उपयोग, बहुभाषी और बहुआयामी पाठ्यक्रम, क्रियात्मक गतिविधियाँ, मूल्य आधारित शिक्षा और खेल-कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समावेश आवश्यक है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि जब विद्यालय वातावरण समग्र और सकारात्मक होता है, तो छात्र अधिक सक्रिय, आत्मनिर्भर और रचनात्मक बनते हैं। उनका ध्यान केंद्रित रहता है, सीखने की प्रक्रिया में रुचि बढ़ती है और भावनात्मक संतुलन बेहतर होता है (Sharma & Yadav, 2021)। इसके विपरीत, यदि विद्यालय वातावरण असंगठित, अनुशासनहीन और नकारात्मक हो, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव छात्रों की शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार पर पड़ता है। तनाव, उदासी, आत्मविश्वास की कमी और सहपाठी संघर्ष जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए नीति निर्माता और शिक्षक दोनों का कर्तव्य है कि वे सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण करें। अतः शैक्षणिक वातावरण का सुधार केवल भौतिक संरचना या तकनीकी संसाधनों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह छात्रों के **समग्र विकास, सीखने की गुणवत्ता और सामाजिक-भावनात्मक संतुलन** तक पहुँचना चाहिए। NEP-2020 के सिद्धांतों का प्रभावी कार्यान्वयन ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि विद्यालय न केवल शिक्षा का केन्द्र बने, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और जीवन कौशल विकास का भी स्रोत बने।

भौतिक वातावरण का सुधार और प्रभाव : भौतिक वातावरण का तात्पर्य विद्यालय में उपस्थित **भौतिक संरचना, कक्षा-कक्ष, फर्नीचर, उपकरण, खेल का मैदान, पुस्तकालय, विज्ञान और कंप्यूटर प्रयोग-शालाएँ** आदि से है। यह वातावरण छात्रों के सीखने और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सुव्यवस्थित, साफ-सुथरा और तकनीकी रूप से समर्थ भौतिक वातावरण विद्यार्थियों की एकाग्रता, सीखने की रुचि और शैक्षणिक प्रदर्शन को सीधे प्रभावित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) में विद्यालयों के भौतिक वातावरण के सुधार को एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में माना गया है। नीति के अनुसार, प्रत्येक विद्यालय में **सुरक्षित, स्वच्छ और समुचित शिक्षण-संसाधनों से युक्त वातावरण** होना चाहिए। इसमें डिजिटल कक्षा, स्मार्ट बोर्ड, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, खेल और सांस्कृतिक सुविधाएँ शामिल हैं (Government of India, 2020)। नीति का उद्देश्य केवल भौतिक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों के समग्र विकास और उनकी सीखने की प्रक्रिया को सक्रिय बनाना है। शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि सुव्यवस्थित भौतिक वातावरण छात्रों की **सकारात्मक सोच, रचना-त्मकता और समस्या समाधान क्षमता** को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, पर्याप्त प्रकाश और हवादार कक्षा में छात्रों का ध्यान अधिक केन्द्रित रहता है और उनका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रहता है (Cohen, McCabe, Michelli, & Pickeral, 2009)। इसके विपरीत, असुव्यवस्थित, गंदा या तकनीकी संसाधनों से वंचित भौतिक वातावरण छात्रों की सीखने की क्षमता और सहभागिता को प्रभावित करता है। भौतिक वातावरण के सुधार से न केवल शैक्षणिक उपलब्धियाँ बढ़ती हैं, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक और भावनात्मक विकास भी बेहतर होता है। खेल के मैदान और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के टीम वर्क, नेतृत्व क्षमता और अनुशासन को बढ़ावा देती हैं। इसी प्रकार, पुस्तकालय और प्रयोगशालाएँ विद्यार्थियों के **स्वतंत्र अधिगम और अनुभवात्मक शिक्षा** को सशक्त बनाती हैं। अतः भौतिक वातावरण का सुधार केवल भवन और उप-करण तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह छात्रों के **समग्र विकास, सीखने की गुणवत्ता और मानसिक स्वास्थ्य** तक पहुँचना चाहिए। NEP-2020 के प्रभावी कार्यान्वयन से विद्यालयों में ऐसा वातावरण निर्मित किया जा सकता है, जो छात्रों के व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षणिक विकास के लिए अनिवार्य है।

सामाजिक और भावनात्मक वातावरण : विद्यालय में सामाजिक और भावनात्मक वातावरण का तात्पर्य छात्रों के बीच **सहयोग, मित्रता, आपसी सम्मान, संवाद, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और भावनात्मक सुरक्षा** से है। यह वातावरण न केवल छात्रों के सामाजिक कौशल को विकसित करता है, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सीखने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। एक सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक वातावरण में छात्र आत्मनिर्भर, उत्तरदायी और रचनात्मक बनते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने सामाजिक और भावनात्मक वातावरण को सुधारने के लिए विशेष दिशा-निर्देश दिए हैं। नीति के अनुसार, प्रत्येक विद्यालय में ऐसा वातावरण होना चाहिए जो **सहिष्णुता, समावेशिता और सहयोग** को बढ़ावा दे। इसमें छात्र-शिक्षक संवाद, सहपाठी समर्थन, समूह आधारित गतिविधियाँ, मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम और विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना शामिल है (Government of India, 2020)। इस प्रकार का वातावरण छात्रों के **सकारात्मक व्यवहार, आत्म-सम्मान और निर्णय लेने की क्षमता** को विकसित करता है। अध्ययन बताते हैं कि सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक वातावरण से छात्रों की **शैक्षणिक उपलब्धियाँ, ध्यान क्षमता और सामाजिक सहभागिता** में सुधार होता है (Sharma & Yadav, 2021)। इसके विपरीत, असंगठित और तनावपूर्ण सामाजिक वातावरण छात्रों में **तनाव, उदासी, आत्म-संकोच और अनुशासनहीनता** जैसी समस्याओं को जन्म दे सकता है। इस प्रकार, विद्यालयों में सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक वातावरण का निर्माण छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक और भावनात्मक वातावरण का सुधार केवल कक्षा तक सीमित नहीं है। यह खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समूह चर्चा, सहकारी परियोजनाएँ और परामर्श सेवाओं तक फैला होना चाहिए। NEP-2020 के अनुसार, विद्यालयों में विद्यार्थियों की **भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक कौशल** का विकास कराना आवश्यक है, ताकि वे न केवल शिक्षित बल्कि नैतिक और जिम्मेदार नागरिक भी बन सकें। अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक और भावनात्मक वातावरण में सुधार छात्रों के **सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षणिक विकास** के लिए अनिवार्य है। नीति का प्रभावी कार्यान्वयन ही विद्यालयों को ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ छात्र सुरक्षित, प्रेरित और समर्थ बनकर सीख सकें।

चुनौतियाँ : विद्यालय वातावरण को सकारात्मक और समग्र बनाने में कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आती हैं। भले ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने समग्र सुधार के लिए दिशा-निर्देश दिए हैं, लेकिन उनके कार्यान्वयन में व्यावहारिक कठिनाइयाँ होती हैं। इन चुनौतियों को समझना आवश्यक है ताकि नीति के लक्ष्य सफलतापूर्वक प्राप्त किए जा सकें। भौतिक और संसाधन संबंधी चुनौतियाँ सबसे प्रमुख हैं। कई विद्यालयों में पर्याप्त कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, विज्ञान और कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ, खेलकूद और सांस्कृतिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। डिजिटल उपकरण और इंटरनेट की कमी भी शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करती है (Government of India, 2020)।

शिक्षक संबंधी चुनौतियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण, बहुआयामी शिक्षण विधियों की समझ और छात्र-केंद्रित शिक्षण की कमी कई विद्यालयों में देखी जाती है। इसके अलावा, शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात में असंतुलन, अनुभवहीन शिक्षकों की नियुक्ति और उच्च कार्यभार सुधार प्रयासों को बाधित करता है। सामाजिक और भावनात्मक चुनौतियाँ भी प्रभावशाली हैं। कुछ छात्रों के लिए सुरक्षित और सहयोगात्मक वातावरण का अभाव, मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी और अनुशासन संबंधी समस्याएँ सीखने की प्रक्रिया में बाधा डालती हैं (Sharma & Yadav, 2021)। परिवार और समाज का समर्थन न होना, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, विद्यालय सुधार प्रयासों की प्रभावशीलता को कम करता है। नीति-निर्माण और कार्यान्वयन में प्रशासनिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। कुछ राज्यों

और जिलों में नीति के निर्देशों का पालन असंगठित रूप से होता है, जिससे सुधार कार्यक्रमों का समान्य और स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय वातावरण में सुधार के प्रयासों को सफल बनाने के लिए **भौतिक, शिक्षक, सामाजिक और प्रशासनिक चुनौतियों** को ध्यान में रखते हुए रणनीतियाँ बनाना आवश्यक है। NEP-2020 के लक्ष्य तभी प्राप्त होंगे जब इन बाधाओं को समझकर उनका समाधान किया जाए और सभी स्तरों पर समन्वित प्रयास किए जाएँ।

समाधान और सुधार : विद्यालय का वातावरण छात्रों के समग्र विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने विद्यालयों में सकारात्मक, समावेशी और छात्र-केंद्रित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए कई दिशा-निर्देश दिए हैं। विद्यालय वातावरण की चुनौतियों को पहचानने के बाद, उनका समाधान और सुधार आवश्यक है ताकि छात्र शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक दृष्टि से पूर्ण रूप से विकसित हो सकें।

- **भौतिक वातावरण का सुधार :** भौतिक वातावरण में सुधार के लिए पर्याप्त कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल और सांस्कृतिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना आवश्यक है। डिजिटल उपकरण, स्मार्ट क्लासरूम और इंटरनेट की उपलब्धता से शिक्षा में नवीनता और अनुभवात्मक सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है (Government of India, 2020)।
- **शिक्षक प्रशिक्षण और विकास :** सुधार का एक प्रमुख स्तंभ शिक्षक हैं। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को छात्र-केंद्रित शिक्षण, बहुआयामी शिक्षण विधियाँ और सामाजिक-भावनात्मक समर्थन प्रदान करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। नियमित कार्यशालाएँ और मेंटरिंग सिस्टम से शिक्षक अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से निभा सकते हैं।
- **सामाजिक और भावनात्मक सुधार :** विद्यालय में सकारात्मक सामाजिक और भावनात्मक वातावरण बनाने के लिए छात्र-शिक्षक संवाद, समूह गतिविधियाँ, सहकारी परियोजनाएँ और परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे छात्रों में आत्मविश्वास, सहनशीलता, सहयोग और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है (Sharma & Yadav, 2021)।
- **प्रशासनिक और नीति आधारित सुधार :** नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रशासनिक स्तर पर योजनाबद्ध और समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। विद्यालयों में सुधार कार्यक्रमों की निगरानी, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया प्रणाली लागू करने से सुधार की प्रक्रिया स्थायी और प्रभावी बनती है।
- **समुदाय और परिवार का सहयोग :** विद्यालय और परिवार के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए अभिभावक-मंच, सामुदायिक कार्यक्रम और जागरूकता अभियान महत्वपूर्ण हैं। इससे बच्चों के सीखने और सामाजिक विकास में स्थायी प्रभाव पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय वातावरण में सुधार केवल भौतिक संरचना तक सीमित नहीं है। यह शिक्षक, छात्र, प्रशासन और समुदाय सभी के समन्वित प्रयास से ही संभव है। NEP-2020 के सिद्धांतों के प्रभावी कार्यान्वयन से विद्यालय एक ऐसा मंच बन सकते हैं जहाँ छात्र सुरक्षित, प्रेरित और समर्थ बनकर सीख सकें, जिससे उनका समग्र विकास सुनिश्चित हो।

निष्कर्ष : विद्यालय वातावरण छात्रों के **शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और मानसिक विकास** में निर्णायक भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने इस तथ्य को मान्यता देते हुए समग्र सुधार के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए हैं। नीति का उद्देश्य केवल भौतिक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सामाजिक और भावनात्मक समर्थन, समावेशी और बहुआयामी शिक्षण विधियों के माध्यम से छात्रों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है (Government of India, 2020)। शोध और अध्ययन यह दर्शाते हैं कि **सकारात्मक भौतिक, सामाजिक और भावनात्मक वातावरण** छात्रों की सीखने की क्षमता,

रचनात्मकता, आत्मविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। वहीं, असंगठित और नकारात्मक वातावरण छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और सामाजिक व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है (Sharma & Yadav, 2021)। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालय में सुधार प्रयासों की सफलता केवल नीति निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका वास्तविक प्रभाव **समान्य कार्यान्वयन, शिक्षक प्रशिक्षण, छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण, प्रशासनिक समन्वय और परिवार एवं समुदाय के सहयोग** पर निर्भर करता है। NEP-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन से विद्यालयों में ऐसा वातावरण निर्मित किया जा सकता है, जहाँ छात्र सुरक्षित, प्रेरित और समर्थ बनकर सीख सकें। अंततः, विद्यालय वातावरण में सुधार और सकारात्मक परिवर्तन न केवल छात्रों के व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि यह समग्र शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और राष्ट्रीय शिक्षा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भी अनिवार्य हैं।

सन्दर्भ :

1. Ministry of Education. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार. https://www.education.gov.in/
2. Cohen, L., Manion, L., & Morrison, K. (2011). शिक्षा अनुसंधान के तरीके (7वां संस्करण). लंदन: राउटलेज।
3. Fraser, B. J. (2012). विद्यालय का वातावरण और छात्र उपलब्धि. न्यू साउथ वेल्स: डिकसन पब्लिकेशन।
4. Singh, R., & Verma, P. (2019). विद्यालय पर्यावरण और विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि. भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 10(2), 45–60।
5. Kaur, H. (2018). सामाजिक वातावरण का विद्यार्थियों पर प्रभाव. शिक्षा और समाज, 15(1), 32–48।
6. UNESCO. (2017). Quality education and school environment. Paris: UNESCO Publishing.
7. Tiwari, S., & Sharma, A. (2021). भौतिक और सांस्कृतिक वातावरण का छात्र व्यवहार पर प्रभाव. Journal of Indian Education, 12(3), 77–92।
8. भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
9. शर्मा, आर., & यादव, पी. (2021)। स्कूल जलवायु का छात्रों की सीखने की उपलब्धियों पर प्रभाव। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोसाइटी, 12(3), 45–58।
10. कोहेन, जे., मैककेब, एल., मिशेली, एन. एम., & पिकरेल, टी. (2009)। स्कूल क्लाइमेट: अनुसंधान, नीति, अभ्यास और शिक्षक प्रशिक्षण। टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 111(1), 180–213।
11. कुमार, ए. (2019)। भारत में शिक्षा सुधार: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण। नई दिल्ली: अकादमिक प्रेस।
12. फ्रेजर, बी. जे. (2015)। कक्षा का शिक्षण वातावरण: समीक्षा, संदर्भ और संभावना। एडवांसेस इन लर्निंग एंड इंस्ट्रक्शन (पृ. 119–148)। स्प्रिंगर।

•